



Kaam Ki Baten (Hindi)

(हफ्तावार रिसाला : 191)
Weekly Booklet : 191

अमीरे अहले सुन्नत امير اهل السنة والجماعة की किताब "मदनी पन्जसूरह" की एक किस्त

काम की बातें

सफ़हत : 20

- 49 इन्तिहाई करआमद मदनी फूल 1
- 30 ग़लतियों की निशान देही 8
- सांप, बिच्छू, कन्खजूरा और च्यूटियों से नजात के तरीके 11
- मे'दे की ख़राबी और मुसल्लिफ़ अमराज 15
- मे'दे की बीमारियों का धरेलू इलाज 17

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी امير اهل السنة والجماعة

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
 اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ यह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاذْكُرْ
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (مُسْتَرْفَ ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना
 व बकीअ
 व मरिफ़त



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला “काम की बातें”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या ने उर्दू ज़बान में मुस्तब किया है ।
 ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

काम की बातें

दुआए अन्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला “काम की बातें” पढ़ या सुन ले उस के दुन्या व आख़िरत के काम बना दे और उसे अपने प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत से जन्नतुल फ़िरदौस में बिना हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।

اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :
 जिस ने मुझ पर सो मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह पाक उस की दोनों आंखों के दरमियान लिख देता है कि येह निफ़ाक़ और जहन्नम की आग से आज़ाद है और उसे बरोज़े क़ियामत शुहदा के साथ रखेगा । (मूज्म अوسط, 5/252, حدिथ: 7235)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

49 इन्तिहाई कार आमद मदनी फूल

(1) रात को दरवाज़ा बन्द करते वक़्त घर के अन्दर अच्छी तरह देखभाल कर लीजिये कि कोई अजनबी या कुत्ता, बिल्ली अन्दर तो नहीं रह गया येह आदत डाल लेने से إِنَّ شَأْنَهُ اللهُ घर में कोई नुक़सान नहीं होगा । (2) घर और घर के तमाम सामानों को साफ़ सुथरा रखिये और हर चीज़ को उस की जगह पर रखिये । (3) सब घर वाले आपस में तै कर लें कि फुलां चीज़ फुलां जगह पर रहेगी फिर सब घर वाले इस के पाबन्द हो जाएं कि जब उस चीज़ को वहां से उठाएं तो इस्ति'माल कर के फिर उसी जगह रख दें ताकि हर आदमी

को बिगैर पूछे और बिला दूंडे वोह मिल जाया करे और ज़रूरत के वक़्त तलाश करने की हाज़त न पड़े। (4) घर के तमाम बरतनों को धो, मांझ कर किसी अलमारी या ताक़ पर उलटा कर के रख दीजिये और फिर दोबारा उस बरतन को इस्ति'माल करना हो तो फिर उस बरतन को बिगैर धोए इस्ति'माल मत कीजिये। (5) कोई जूठा बरतन या गिज़ा या दवा लगा हुवा बरतन हरगिज़ हरगिज़ न रख दिया करें, जूठे या गिज़ाओं और दवाओं से आलूदा बरतनों में जरासीम पैदा होते हैं और तरह तरह की बीमारियों के पैदा होने का ख़तरा रहता है। (6) अंधेरे में बिला देखे हरगिज़ हरगिज़ पानी न पियें न खाना खाएं। (7) घर या आंगन के रास्ते में चारपाई या कुरसी या कोई बरतन या कोई सामान मत डाल दिया करें ऐसा करने से बा'ज़ दफ़्आ रोज़ की आदत के मुताबिक़ बे खटके चले आने वाले को ठोकर ज़रूर लगती है और बा'ज़ मर्तबा तो सख़्त चोटें भी लग जाती हैं। (8) सुराही (Pitcher) के मुंह या लोटे की टूटी से मुंह लगा कर हरगिज़ कभी पानी न पियें क्यूं कि अव्वलन तो येह ख़िलाफ़े तहज़ीब है दूसरा येह ख़तरा है कि सुराही या टूटी में कोई कीड़ा मकोड़ा छुपा हो और वोह पानी के साथ पेट में चला जाए। (9) हफ़्ता या दस दिनों में एक दिन घर की मुकम्मल सफ़ाई के लिये मुक़र्रर कर लीजिये उस दिन पूरे मकान की सफ़ाई कर लीजिये। (10) दिन रात बैठे रहना या पलंग पर सोए या लेटे रहना तन्दुरुस्ती के लिये बेहद नुक्सान देह है। इस्लामी भाइयों को साफ़ और खुली हवा में कुछ चल फिर लेना और इस्लामी बहनों को कुछ मेहनत का काम हाथ से कर लेना तन्दुरुस्ती के लिये बहुत ज़रूरी है। (11) जिस जगह चन्द आदमी बैठे हों उस जगह बैठ कर न थूकें न खन्कार निकालें न नाक

साफ़ करें कि ख़िलाफ़े तहज़ीब भी है और दूसरों के लिये धिन पैदा करने वाली चीज़ है। (12) दामन या आंचल या आस्तीन से नाक साफ़ न करें न हाथ मुंह इन चीज़ों से पोंछें क्यूं कि येह गन्दगी है और तहज़ीब के ख़िलाफ़ भी। (13) जूती और कपड़ा या बिस्तर इस्ति'माल से पहले झाड़ लिया करें मुम्किन है कोई मूजी जानवर बैठा हो जो बे ख़बरी में आप को डस ले। (14) छोटे बच्चों को ख़िलाते बहलाते कभी हरगिज़ हरगिज़ उछाल उछाल कर न ख़िलाएं खुदा न ख़्वास्ता हाथ से छूट गया तो बच्चे की जान ख़तरे में पड़ जाएगी। (15) बीच दरवाजे में न बैठा करें सब आने जाने वालों को तकलीफ़ होगी और खुद आप भी तकलीफ़ उठाएंगे। (16) अगर पोशीदा जगहों में किसी के फोड़ा फुन्सी (Rashes and Pimples) या दर्द व वरम हो तो उस से येह मत पूछिये कि कहां है ? इस से ख़्वाह म ख़्वाह उस को शरमिन्दगी होगी। (17) बैतुल ख़ला या गुस्लख़ाने से कमर बन्द या तहबन्द या साढ़ी बांधते हुए बाहर न निकलें बल्कि अन्दर ही से बांध कर बाहर निकलें। (18) जब आप से कोई शख़्स कोई बात पूछे तो पहले उस का जवाब दीजिये इस के बा'द ही दूसरा काम कीजिये। (19) जो बात किसी से कहें या किसी का जवाब दें तो साफ़ साफ़ बोलें और इतनी आवाज़ से बोलें कि सामने वाला अच्छी तरह सुन और समझ ले। (20) अगर किसी के बारे में कोई पोशीदा बात किसी से कहनी हो और वोह शख़्स उस मजलिस में मौजूद हो तो आंख या हाथ से बार बार उस की तरफ़ इशारा मत कीजिये कि नाहक़ उस शख़्स को तरह तरह के शुबुहात होंगे। (21) किसी को कोई चीज़ देनी हो तो अपने हाथ से उस के हाथ में दीजिये या बरतन में रख कर उस के सामने पेश कीजिये, दूर से फेंक कर कोई चीज़

किसी को मत दीजिये कि शायद उस के हाथ में न पहुंच सके और ज़मीन पर गिर कर टूट फूट जाए या ख़राब हो जाए। (22) अगर किसी को पंखा करें तो इस का ख़याल रखें कि उस के सर या चेहरा या बदन के किसी हिस्से में पंखा लगने न पाए और पंखे को इतने ज़ोर से भी न झला करें कि खुद आप या दूसरे परेशान हो जाएं। (23) मैले कपड़े जो धोबी के यहां जाने वाले हों उन को घर में इधर उधर पड़े या बिखरे हुए ज़मीन पर न रहने दें बल्कि मकान के किसी कोने में लकड़ी का एक मा'मूली बॉक्स रख लीजिये और सब मैले कपड़ों को उसी में जम्अ करते रहिये। (24) अपने ऊनी कपड़ों को कभी कभी धूप में सुखा लिया करें और किताबों को भी ताकि कीड़े मकोड़े कपड़ों और किताबों को काट कर ख़राब न कर सकें। (25) जहां कोई आदमी बैठा हो वहां गर्दों गुबार वाली चीज़ों को न झाड़ें। (26) किसी दुख या परेशानी या ग़म और बीमारी वगैरा की ख़बरों को हरगिज़ उस वक़्त तक नहीं कहना चाहिये जब तक कि उस की ख़ूब अच्छी तरह तहकीक़ न हो जाए। (27) खाने पीने की कोई चीज़ खुली मत रखिये हमेशा ढांक कर रखा कीजिये और मक्खियों के बैठने से बचाइये। (28) दौड़ कर, मुंह ऊपर उठा कर नहीं चलना चाहिये इस में ठोकर लगने, किसी से टकरा जाने वगैरा के बहुत से ख़तरात हैं। (29) चलने में पाउं पूरा उठाया करें और पूरा पाउं ज़मीन पर रखा करें पन्जों या एड़ी के बल चलना या पाउं घसीटते हुए चलना येह तहज़ीब के ख़िलाफ़ है। (30) कपड़ा पहने पहने नहीं सीना चाहिये। (31) हर किसी पर अन्धा भरोसा मत कर लिया करें जब तक किसी को हर तरह से बार बार आज़मा न लें उस का ए'तिबार मत कर लिया करें ख़ास कर अक्सर शहरों में बहुत सी औरतें कोई हज़्जन

साहिबा बनी हुई का'बे का गिलाफ़ लिये हुए, कोई ता'वीज़ गन्डे झाड़ फूंक करती हुई घरों में घुसती फिरती हैं और औरतों के मज्मअ में बैठ कर अल्लाह पाक व रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बातें करती हैं, ख़बरदार ! ख़बरदार ! इन औरतों को हरगिज़ हरगिज़ घरों में आने ही मत दीजिये दरवाज़े ही से वापस कर दीजिये । ऐसी औरतों ने बहुत से घरों का सफ़ाया कर डाला है इन औरतों में बा'ज चोरों और डाकूओं की मुख़्बर भी हुवा करती हैं जो घर के अन्दर घुस कर सारा माहोल देख लेती हैं फिर चोरों और डाकूओं को उन के घरों का हाल बता देती हैं । (32) जहां तक हो सके कोई सौदा सामान उधार मत मंगाया करें और अगर मजबूरी से मंगाना ही पड़ जाए तो दाम पूछ कर तारीख़ के साथ लिख लीजिये और जब रुपिया आप के पास आ जाए तो फ़ौरन अदा कर दीजिये ज़बानी याद पर भरोसा मत कीजिये । (33) जहां तक हो सके ख़र्च चलाने में बहुत ज़ियादा किफ़ायत से काम लीजिये और रुपिया पैसा बहुत ही इन्तिज़ाम से उठाइये बल्कि जितना ख़र्च के लिये आप को मिले उस में से कुछ न कुछ बचा लिया कीजिये । (34) जो औरतें बहुत से घरों में आया जाया करती हैं जैसे धोबन, काम वालियां वगैरा उन के सामने हरगिज़ हरगिज़ अपने घर के इख़्तिलाफ़ और झगड़ों को मत बयान करें क्यूं कि अक्सर ऐसी औरतें घरों की बातें दस घरों में कहती फिरती हैं । (35) कोई शख़्स तुम्हारे दरवाज़े पर आ कर आप के घर के किसी फ़र्द का दोस्त या रिश्तेदार होना ज़ाहिर करे तो हरगिज़ उस को अपने मकान के अन्दर मत बुलाइये न उस का कोई सामान अपने घर में रखिये न अपना कोई कीमती सामान उस के सिपुर्द कीजिये । (36) महब्बत में अपने बच्चों को बिला भूक के खाना मत ख़िलाइये न

इस्सार कर के ज़ियादा खिलाओ कि इन दोनों सूरतों में बच्चे बीमार हो जाते हैं जिस की तकलीफ़ आप को और बच्चों दोनों को भुगतनी पड़ सकती है । (37) बच्चों के सर्दी गरमी के कपड़ों का ख़ास तौर पर ध्यान लाज़िमी है बच्चे सर्दी गरमी लगने से बीमार हो जाया करते हैं । (38) बच्चों को मां बाप बल्कि दादा का नाम भी (बल्कि घर का एड्रेस भी) याद करा दीजिये और कभी कभी पूछा कीजिये ताकि याद रहे, इस में येह फ़ाएदा है कि अगर खुदा न ख़्वास्ता बच्चा खो जाए और कोई उस से पूछे कि तेरे बाप का क्या नाम है ? तेरे मां बाप कौन हैं ? (तुम्हारा घर कहां है) तो अगर बच्चे को नाम व पता वगैरा याद होंगे तो बता देगा फिर कोई न कोई उस को आप के पास पहुंचा देगा या आप को बुला कर बच्चा आप के सिपुर्द कर देगा और अगर बच्चे को मां बाप का नाम (व पता) याद न रहा तो बच्चा येही कहेगा कि मैं अब्बा या अम्मां का बच्चा हूं कुछ ख़बर नहीं कि कौन अब्बा ? कौन अम्मां ? (39) इस्लामी बहनें छोटे बच्चों को अकेला छोड़ कर घर से बाहर न चली जाया करें कि ऐसा भी हुवा है कि एक औरत बच्चे के आगे खाना रख कर बाहर चली गई । बहुत से कव्वों ने बच्चे के आगे का खाना छीन कर खा लिया और चोंच मार मार कर बच्चे की आंख भी फोड़ डाली । इसी तरह एक बच्चे को बिल्ली ने अकेला पा कर इस क़दर नोच डाला कि बच्चा मर गया । (40) किसी को ठहराने या खाना खिलाने पर बहुत ज़ियादा इस्सार मत कीजिये बा'ज़ मर्तबा इस में मेहमान को उलझन या तकलीफ़ हो जाती है फिर सोचिये कि भला ऐसी महबूबत से क्या फ़ाएदा जिस का अन्जाम नफ़रत और बदनामी हो । (41) वज़न या ख़तरे वाली कोई चीज़ किसी आदमी के ऊपर से उठा कर मत दिया करें खुदा न ख़्वास्ता वोह

चीज़ हाथ से छूट कर आदमी के ऊपर गिर पड़ी तो इस का अन्जाम कितना ख़तरनाक होगा ? (42) किसी बच्चे या शागिर्द को सज़ा देनी हो तो मिट्टी, लकड़ी या लात घूंसा से मत मारें खुदा न ख़्वास्ता अगर किसी नाजुक जगह चोट लग जाए तो कितनी बड़ी मुसीबत सर पर आ पड़ेगी ! (43) अगर आप किसी के घर मेहमान बन कर जाएं और खाना खा चुके हों तो हस्बे हाल जाते ही घर वालों से कह दें कि हम खाना खा कर आए हैं क्यूं कि घर वाले लिहाज़ की वजह से बिगैर पूछे और चुपके चुपके खाना तय्यार कर लेंगे और जब खाना सामने आ गया तो आप ने कह दिया कि हम तो खाना खा कर आए हैं सोचिये कि उस वक़्त घर वालों को कितना अफ़सोस होगा ? (44) मकान में अगर रक़म या ज़ेवर वगैरा दफ़न कर रखा है तो अपने घर वालों में से जिस पर भरोसा हो उस को बता दीजिये वरना शायद तुम्हारा अचानक इन्तिक़ाल हो जाए तो वोह ज़ेवर या रक़म हमेशा ज़मीन ही में रह जाएगी । (इसी तरह दीगर खुफ़्या अम्वाल व अमानात व दस्तावेज़ात के बारे में किसी को ए'तिमाद में ले लेना मुफ़ीद है) (45) मकान में जलता चराग़ या आग छोड़ कर बाहर मत चले जाइये चराग़ और आग को मकान से निकलते वक़्त बुझा देना चाहिये । (46) इतना ज़ियादा मत खाइये कि चूरन की जगह भी पेट में बाक़ी न रह जाए । (47) जहां तक मुम्किन हो रात को मकान में तन्हा मत रहें खुदा जाने रात में क्या इत्तिफ़ाक़ पड़ जाए ? लाचारी और मजबूरी की तो और बात है मगर जब तक हो सके मकान में रात को अकेले नहीं सोना चाहिये । (48) अपने हुनर पर नाज़ मत कीजिये । (49) बुरे वक़्त का कोई साथी नहीं होता इस लिये सिर्फ़ खुदा पर भरोसा रखिये ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 558 ब तग़य्युरे क़लील)

“शरीअत व सुन्नत की पाबन्दी करने में नजात है” के तीस हुरूफ़ की निस्बत से 30 ग़लतियों की निशान देही

- (1) इस ख़याल में हमेशा मगन रहना कि जवानी और तन्दुरुस्ती हमेशा रहेगी । (2) मुसीबतों में बे सब्र बन कर चीख़ व पुकार करना । (3) अपनी अक्ल को सब से बढ़ कर समझना । (4) दुश्मन को हकीर समझना । (5) बीमारी को मा'मूली समझ कर शुरूअ में इलाज न करना । (6) अपनी राय पर अमल करना और दूसरों के मश्वरों को ठुकरा देना । (7) किसी बदकार को बार बार आजमा कर भी उस की चापलूसी में आ जाना । (8) बेकारी में खुश रहना और रोज़ी की तलाश न करना । (9) अपना राज़ किसी दूसरे को बता कर उसे पोशीदा रखने की ताकीद करना । (10) आमदनी से ज़ियादा खर्च करना । (11) लोगों की तक्लीफ़ में शरीक न होना और उन से इमदाद की उम्मीद रखना । (12) एक दो ही मुलाक़ात में किसी शख़्स की निस्बत कोई अच्छी या बुरी राय काइम कर लेना । (13) वालिदैन की ख़िदमत न करना और औलाद से ख़िदमत की उम्मीद रखना । (14) किसी काम को इस ख़याल से अधूरा छोड़ देना कि फिर किसी वक़्त मुकम्मल कर लिया जाएगा । (15) हर शख़्स से बदी करना और लोगों से अपने लिये नेकी की तवक्कोअ रखना । (16) गुमराहों की सोहबत में उठना बैठना । (17) कोई अमले सालेह की तल्कीन करे तो उस पर ध्यान न देना । (18) खुद हराम व हलाल का ख़याल न करना और दूसरों को भी इस राह पर लगाना । (19) झूटी क़सम खा कर, झूट बोल कर, धोका दे कर अपनी तिजारत को फ़रोग देना । (20) इल्मे दीन और दीनदारी को इज़्ज़त न समझना । (21) खुद को दूसरों से बेहतर समझना । (22) फ़कीरों और साइलों को अपने दरवाजे से धक्का दे कर भगा देना । (23) ज़रूरत से

ज़ियादा बात चीत करना । (24) अपने पड़ोसियों से बिगाड़ रखना । (25) बादशाहों और अमीरों की दोस्ती पर ए'तिबार करना । (26) ख़्वाह म ख़्वाह किसी के घरेलू मुआमलात में दख़ल देना । (27) बिगैर सोचे समझे बात करना । (28) तीन दिन से ज़ियादा किसी का मेहमान बनना । (29) अपने घर का भेद दूसरों पर ज़ाहिर करना । (30) हर शख़्स के सामने अपने दुख दर्द बयान करना । (जन्नती ज़ेवर, स. 557)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

“मोहतात आदमी सदा सुखी” के सोलह हुरूफ़ की निस्बत से 16 घरेलू इलाज और कार आमद मदनी फूल

(1) पलंग की पाइंती की जानिब अजवाइन (Carom Seeds) की पोटलियां (Small Bags) बांधने से उस पलंग के खटमल भाग जाएंगे । (2) अगर मच्छर दानी मुयस्सर न हो और गर्मियों के मौसिम में मच्छर ज़ियादा तंग करें तो बिस्तर पर जा ब जा तुलसी (नामी पौदे) के पत्ते फैला दीजिये मच्छर भाग जाएंगे । (3) लकड़ी में कील ठोकते हुए लकड़ी के फटने का ख़तरा हो तो उस कील को पहले साबून में ठोकने के बा'द लकड़ी में ठोकना चाहिये इस तरह लकड़ी नहीं फटेगी । (4) कागज़ी लीमूं (पतले छिलके वाला लीमूं) का रस अगर दिन में चन्द बार पी लें तो मलेरिया का हम्ला नहीं होगा । (5) लू (Heatwave) से बचने के लिये तेज़ धूप में सफ़र करते वक़्त जेब में एक पियाज़ रख लेना चाहिये । (6) हैज़ा (Cholera) (नामी ख़तरनाक बीमारी) के हम्ले से बचने के लिये सिरका, लीमूं और पियाज़ का ब कसरत इस्ति'माल करना चाहिये । (7) सब्जियों को जल्द गलाने और आटे में ख़मीर जल्द आने के लिये ख़रबूजे के छिलकों को ख़ूब सुखाएं और उस को बारीक पीस कर सफूफ़ (या'नी पावडर) तय्यार कर लें

फिर इसी सफूफ़ को सब्जियों में जल्द गलाने के लिये डालें और आटे में खमीर जल्द आने के लिये थोड़ा सफूफ़ आटे में डाल दिया करें। (8) रोगने जैतून (OLIVE OIL) दांतों पर मलने से मसूदे और हिलते हुए दांत मज्बूत हो जाते हैं। (9) हिचकी (Hiccup) आ रही हो तो लोंग खा लेने से बन्द हो जाती है। (10) सर में जूएं पड़ जाएं तो सते पोदीना (या'नी पोदीना का अरक़) साबून के पानी में हल कर के सर में डालें और सर को खूब धोएं दो तीन मर्तबा ऐसा करने से सब जूएं मर जाएंगी। (11) लीमूं की फांक (टुकड़ा) चेहरे पर कुछ दिनों मलने और फिर साबून से धो लेने से चेहरे के कील महासे दूर हो जाते हैं। (12) पैदल चलने की वजह से अगर पाउं में थकन ज़ियादा मा'लूम हो तो नमक मिले हुए गर्म पानी में कुछ देर पाउं रख देने से थकावट दूर हो जाती है। (13) लीमूं को अगर भोबल (या'नी गर्म रेत) में गर्म कर के या गरमा गर्म पतीले के अन्दर चावलों के ऊपर कुछ देर रखने के बा'द निचोड़ें तो अरक़ आसानी के साथ ज़ियादा निकलेगा। (14) आग से जल जाएं तो बदन के जले हुए मक़ाम पर फ़ौरन रोशनाई (Ink) लगाएं या चूने का पानी डालें या बरोध (बरगद का दरख़्त) का तेल लगाएं या शकर सफ़ेद पानी में घोल कर लगाएं। (15) सांप या कोई ज़हरीला जानवर काट ले तो काटने की जगह से ज़रा ऊपर फ़ौरन किसी मज्बूत धागे से कस कर बांध दीजिये और मरीज़ को सोने मत दीजिये। यह फ़ोरी तरकीब कर के फिर डॉक्टर से रुजूअ कीजिये। (16) अगर कोई संखिया (नामी ख़तरनाक ज़हर) या अफ़यून या धतूरा (एक पौदा जिस का बीज नशा आवर होता है) खा ले तो फ़ौरन सोया (एक खुशबूदार साग) का बीज दो तोला आध सैर⁽¹⁾ पानी में

①..... एक सेर 933.12 गिराम या'नी 1 किलो गिराम से लग भग 7 फ़ीसद कम होता है, आध सेर उस का निस्फ़ होगा।

पका कर उस में पाव भर घी एक तोला नमक मिला कर नीम गर्म पिलाएं और कै (उल्टी) कराएं जब ख़ूब कै हो जाए तो दूध पिलाएं और अगर दूध से भी कै हो जाए तो बहुत अच्छा है और मरीज़ को सोने न दें ۞
 मरीज़ सिद्दहत याब हो जाएगा । (जन्नती ज़ेवर, स. 565)

सांप, बिच्छू, कनखजूरा और च्यूंटियों से नजात के तरीके

सांप : एक पाव नोशादर (Ammoniac) को पांच सेर पानी में घोल कर घर के तमाम बिलों (Holes) सूराखों और कोनों में छिड़क दें अगर घर में सांप होगा तो भाग जाएगा और कभी कभी येह पानी छिड़कते रहें तो उस मकान में सांप नहीं आएगा, ۞ । दूसरी तरकीब येह है कि घर के बिलों और दूसरे सब सूराखों में राई डाल दें सांप फ़ौरन मर जाएगा और अगर अपने आस पास राई डाल कर सोएं तो सांप क़रीब नहीं आ सकता ।

बिच्छू : मूली का अरक अगर बिच्छू (Scorpion) के ऊपर डाल दिया जाए तो बिच्छू मर जाएगा और अगर बिच्छू के सूराख में मूली के चन्द टुकड़े डाल दिये जाएं तो बिच्छू सूराख से बाहर नहीं निकल सकेगा बल्कि सूराख के अन्दर ही हलाक हो जाएगा । दूसरी तरकीब येह है कि चिरचिट्टा घास की जड़ अगर बिछोने पर रख दी जाए तो बिच्छू बिस्तर पर नहीं चढ़ सकेगा । अगर बिच्छू डंक मार दे तो बहरोज़ा का तेल लगाएं या चिरचिट्टा की जड़ घिस कर लगाएं ज़हर उतर जाएगा ।

कनखजूरा : अगर किसी के बदन में चिमट जाए या कान में घुस जाए तो शकर उस के ऊपर डालें फ़ौरन ही उस के पाउं खाल में से बाहर निकल जाएंगे और अगर पियाज़ का अरक कनखजूरा के ऊपर डाल दें तो वोह जगह भी छोड़ देगा और फिर फ़ौरन ही मर जाएगा और अगर उस के पाउं

चुभने से ज़ख़्म हो गया है तो पियाज़ तवे पर भुलभुला कर उस के ज़ख़्म पर बांधना इक्सीर है ।

पिस्सू (एक परदार ज़हरीला कीड़ा जिस के काटने से खुजली होती है) : इन्द्राइन के फल या इस की जड़ पानी में भिगो कर तमाम घर में पानी छिड़क दीजिये तो उस मकान से पिस्सू भाग जाएंगे ।

च्यूटियां : हींग (एक दरख़्त का बदबूदार गूंद) से भाग जाती हैं ।

कपड़ों और किताबों का कीड़ा : **अफ़सन्तीन** (नामी दवा) या पोदीना या लीमूं के छिलके या नीम के पत्ते या काफूर कपड़ों और किताबों में रख दें तो कपड़े और किताबें कीड़ों के खाने से महफूज़ रहेंगी ।

(जन्नती ज़ेवर, स. 567)

मुंह की बदबू का इलाज

अगर किसी चीज़ के खाने के सबब मुंह में बदबू आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** फ़ाएदा होगा । हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से बदबू आती हो तो “कम ख़ोरी” की सअ़ादत हासिल कर के भूक की बरकतें लूटने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** टांगों और बदन के मुख़्तलिफ़ हिस्सों के दर्द, कब्ज़, सीने की जलन, मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़ले, खांसी और गले के दर्द, मसूढ़ों में खून आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ **मुंह की बदबू** से भी जान छूट जाएगी । भूक बाक़ी रहे इस तरह से कम खाने में **80 फ़ीसद अमराज़** से बचत हो सकती है । (तफ़्सीली मा’लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत के बाब “पेट का कुफ़ले मदीना” का मुतालआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिर्स का इलाज हो जाए तो कई जिस्मानी और रूहानी अमराज़ खुद ही दम तोड़ जाएं ।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

नाक से गहरा सांस ले कर मुम्किन हृद तक रोक रखने के बा'द मुंह से ख़ारिज करना सिद्दहत के लिये इन्तिहाई मुफ़ीद है। दिन भर में जब जब मौक़अ मिले बिल खुसूस खुली फ़ज़ा में रोज़ाना चन्द बार तो ऐसा कर ही लेना चाहिये।

मुंह की बू मा 'लूम करने का तरीक़ा

अगर मुंह में कोई तगय्युरे राइहा (या'नी बदबू) हो तो जितनी बार मिस्वाक और कुल्लियों से इस (बदबू) का इज़ाला (या'नी दूर करना मुम्किन) हो (उतनी बार कुल्लियां करना) लाजिम है, इस के लिये कोई हृद मुक़रर नहीं। बदबूदार कसीफ़ (गाढ़ा) बे एहतियाती का हुक्क़ा पीने वालों को इस का ख़याल (रखना) सख़्त ज़रूरी है और उन से ज़ियादा सिगरेट वाले को कि इस की बदबू मुक्कब तम्बाकू से सख़्त तर और ज़ियादा देर पा है और इन सब से जाइद अशद ज़रूरत तम्बाकू खाने वालों को है जिन के मुंह में उस का जिर्म (या'नी धूएं के बजाए खुद तम्बाकू ही) दबा रहता है और मुंह अपनी बदबू से बसा देता है। येह सब लोग वहां तक मिस्वाक और कुल्लियां करें कि मुंह बिल्कुल साफ़ हो जाए और बू का अस्लन निशान न रहे और इस का इम्तिहान यूं है कि हाथ अपने मुंह के क़रीब ले जा कर मुंह खोल कर जोर से तीन बार हल्क़ से पूरी सांस हाथ पर लें और मअन (फ़ौरन) सूंधें। बिगैर इस के अन्दर की बदबू खुद कम महसूस होती है और जब मुंह में बदबू हो तो मस्जिद में जाना हराम, नमाज़ में दाख़िल होना मन्अ। وَاللّٰهُ اَعْلَمُ (फ़तावा रज़विय्या, 1/838)

मुंह की सफ़ाई का तरीका

जो मिस्वाक और खाने के बा'द ख़िलाल की सुन्नत अदा नहीं करते और दांतों की सफ़ाई करने में सुस्त होते हैं अक्सर उन के मुंह बदबूदार होते हैं। सिर्फ़ रस्मी तौर पर मिस्वाक और ख़िलाल का तिन्का दांतों से मस कर देना काफ़ी नहीं होता। मसूढ़े ज़ख़्मी न हों इस एहतियात के साथ मुम्किना सूरत में ग़िज़ा का एक एक ज़रा दांतों से निकालना होगा वरना दांतों के दरमियान ग़िज़ाई अज्ज़ा पड़े पड़े सड़ते और सख़्त सड़ांद (Rancidity) का बाइस बनते रहेंगे। दांतों की सफ़ाई का एक तरीका येह भी है कि कोई चीज़ खाने और चाय वगैरा पीने के बा'द और इस के इलावा भी जब जब मौक़अ मिले मसलन बैठे बैठे कोई काम कर रहे हैं उस वक़्त पानी का घूंट मुंह में भर लें और जुम्बिशें देते रहें या'नी हिलाते रहें, इस तरह मुंह का कचरा और मैल कुचैल साफ़ होता रहेगा। सादा पानी भी चल जाएगा और अगर नमक वाला नीम गर्म पानी हो तो येह **إِنْ شَاءَ اللهُ** बेहतरीन “माउथ वॉश” साबित होगा।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

जिस्मे इन्सानी में मे'दे की अहम्मिय्यत

मे'दा इन्सानी जिस्म का एक इन्तिहाई अहम उज़्ज है। हम जो कुछ खाते पीते हैं वोह जा कर मे'दे में जम्अ होता है नीज़ मे'दा खाने को हज़्म करने का काम भी करता है। मे'दे की ख़राबी जिस्म के तमाम निज़ाम को मुतअस्सिर कर सकती है, लिहाज़ा इसे दुरुस्त रखना और इस से मुतअल्लिक एहतियातें जानना बहुत ज़रूरी है।

मे'दे की ख़राबी और मुख़्तलिफ़ अमराज़

मे'दे में तेज़ाबियत (Acidity), उल्टियां (Vomiting), सीने में दर्द और जलन, मुंह में कड़वा पानी आना, मे'दे का अल्सर (Stomach Ulcer) और मुनासिब इलाज न करवाने की सूरत में आख़िर कार मे'दे का केन्सर ।

अस्बाब : मे'दे की तकलीफ़ और जलन वगैरा का मस्अला उमूमन रात में ज़ियादा होता है । को और बीमारी न होने की सूरत में इस का सबब रात को देर से ज़ियादा मिक्दार में खाना और फिर फ़ौरन सो जाना हो सकता है । शादी वगैरा दा'वतों के मौक़अ पर ऐसा मस्अला ज़ियादा होता है । तंग फ़िटिंग वाले चुस्त कपड़े पहनना भी इस मस्अले का एक सबब है । मज़ीद अस्बाब में तम्बाकू नोशी, पान गुटके, सौफ़्ट ड्रिंक, तेज़ मिर्च मसालहे वाले खानों का इस्ति'माल और पानी कम पीना वगैरा शामिल हैं । **अपनी गिज़ा**

पर ग़ौर फ़रमाएं : जिन इस्लामी भाइयों के साथ मे'दे के मसाइल वक़तन फ़ वक़तन होते रहते हों वोह अपनी गिज़ा पर ग़ौर करें और जिन चीज़ों के खाने के बा'द इस तकलीफ़ का शिकार होते हों उन से परहेज़ फ़रमाएं ।

परहेज़ : मे'दे की तकलीफ़ में मुब्तला अफ़राद तेज़ मिर्च मसालहे वाली नीज़ तली हुई अश्या के इस्ति'माल से परहेज़ फ़रमाएं । वोह सब्जियां जो देर से हज़्म होती और गेस पैदा करती हैं जैसे गोभी, आलू, अरबी, बेंगन नीज़ चने की दाल, कलेजी, पाए वगैरा इस्ति'माल न करें । उबली हुई सब्जियां, खिचड़ी और दलिया (Porridge) थोड़ी सी काली मिर्च के साथ इस्ति'माल फ़रमाएं ।

मे'दे पर ज़ियादा बोझ मत डालें

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मे'दे के काम करने की भी एक हद है ।

अगर अच्छी तरह चबाए बिगैर या ज़रूरत से ज़ियादा ज़िगाएं इस में डाली जाएं तो बेचारा आखिर किस किस चीज़ को हज़म कर सकेगा? नतीजतन निज़ामे इन्हिज़ाम (Digestive System) दरहम बरहम हो जाएगा, मे'दा बीमार पड़ जाएगा और फिर सारे जिस्म को अमराज़ फ़राहम (Transfer) करने लगेगा, जैसा कि तबीबों के तबीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने हिक्मत निशान है : “मे'दा बदन में हौज़ की मानिन्द है और (बदन की) नालियां (या'नी रगें) मे'दे की तरफ़ आने वाले हैं अगर मे'दा सिह्हत मन्द हो तो रगें (मे'दे में से) सिह्हत ले कर पलटती हैं और अगर मे'दा ख़राब हो तो रगें बीमारी ले कर वापस जाती हैं ।”

(شعب الایمان، 66/5، حدیث: 5796)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

पानी मुनासिब मिक्दार में इस्ति'माल करें

मे'दे में तेज़ाबियत वगैरा की सूरत में सादा पानी का ज़ियादा से ज़ियादा इस्ति'माल मुफ़ीद है । अ़ाम हालात में काम करने वाले अफ़राद रोज़ाना 10 से 12 गिलास जब कि गरमी में और पसीना लाने वाले हालात में काम करने वाले इस से भी ज़ियादा मिक्दार में पानी नोश फ़रमाएं । मे'दे में तेज़ाबियत की सूरत में ठण्डे दूध का इस्ति'माल भी मुफ़ीद है । अगर मे'दे के अल्सर की वजह से जलन हो तो दूध इस्ति'माल न करें ।

दांतों का काम आंतों से मत लीजिये

मे'दे को दुरुस्त रखने के लिये खाना खाते हुए भी एहतियात ज़रूरी है, लिहाज़ा लुक़्मा छोटा लीजिये और चपड़ चपड़ की आवाज़ पैदा न हो इस एहतियात के साथ इस क़दर चबाइये कि मुंह की गिज़ा पतली हो जाए, यूं करने से हाज़िम लुआब भी अच्छी तरह शामिल हो जाएगा। अगर अच्छी तरह चबाए बिगैर निगल जाएंगे तो हज़म करने के लिये मे'दे को सख़्त ज़हमत करनी पड़ेगी और नतीजतन तरह तरह की बीमारियों का सामना हो सकता है लिहाज़ा दांतों का काम आंतों से मत लीजिये। (पुर असरार ख़ज़ाना, स. 20)

मे'दे के अल्सर का अस्ल इलाज

मे'दे के अल्सर का अस्ल इलाज पेट का कुफ़ले मदीना या'नी सादा गिज़ा भूक से कम खाना है। **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के दो अब्बाब "पेट का कुफ़ले मदीना" और "आदाबे त़आम" का मुतालआ फ़रमा कर अमल करें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ!** मे'दे के अल्सर समेत कई अमराज़ से छुटकारा मिलेगा।

मे'दे की बीमारियों का घरेलू इलाज

मे'दे के अल्सर या अंतडियों के ज़ख़्म और सूजन में मेथी का इस्ति'माल बहुत मुफ़ीद है ❀ खांसी की दवाएं आम तौर पर मे'दा ख़राब करती हैं लिहाज़ा पुरानी खांसी के मरीज़ का दवाओं के इस्ति'माल की वजह से मे'दे की जलन और बद हज़्मी के मरज़ से बचना दुश्वार है। मेथी के इस्ति'माल से न सिर्फ़ खांसी को फ़ाएदा होता है बल्कि मे'दे की भी इस्लाह होती है ❀ मेथी का क़हवा (या'नी जोशांदा), मे'दे और अंतडियों की

गन्दगियां साफ़ करता और निज़ामे हज़म से इज़ाफ़ी और नुक्सान देह रतूबतें ख़ारिज करता है। (मेथी के 50 मदनी फूल, स. 3 ता 8 मुल्लकतून)

मुतफ़र्रिक़ मदनी फूल : ❀ इन्सानी जिस्म को मुनासिब मिक्दार में प्रोटीन, विटामिन्ज़ वगैरा की ज़रूरत होती है लिहाज़ा दाल, सब्ज़ी, चावल, गोश्त और फल वगैरा सब चीज़ें मुनासिब मिक्दार में ज़रूर खाएं सिर्फ़ किसी एक या दो पर ज़ोर देना और बाकी को तर्क कर देना मुनासिब नहीं। ❀ जिस तरह ज़ियादा खाने के नुक्सानात हैं यूंही गैर मा'मूली तौर पर ज़ियादा अर्से मे'दे को ख़ाली रखना भी नुक्सान देह है। ❀ खाने के बजाए सिर्फ़ चाय, कोफ़ी या सोफ़्ट ड्रिंक और बिस्किट वगैरा पर इक्तिफ़ा करना और इसे परहेज़ का नाम देना भी नादानी है कि येह मे'दे के लिये ज़ियादा नुक्सान देह है। ❀ जोड़ों के दर्द की दवाएं इस्ति'माल करने वालों को भी मे'दे का अल्सर हो सकता है, लिहाज़ा बिल खुसूस ऐसी अदवियात डॉक्टर के मश्वरे के बिगैर इस्ति'माल न करें। ❀ फ़ास्ट फूड, जंकफूड और कोल्ड ड्रिंक वगैरा मे'दे के लिये ज़हरे कातिल की हैसियत रखते हैं।

मे'दे के अल्सर वगैरा के 2 घरेलू इलाज

(1) दो हफ़्ते तक दिन में तीन मरतबा बन्द गोभी का रस एक एक गिलास पी लीजिये, बन्द गोभी का सालन भी खाइये **إِنْ شَاءَ اللهُ** ! सब बेहतर हो जाएगा। (घरेलू इलाज, स. 55) बन्द गोभी का बतौरै सलाद इस्ति'माल भी फ़ाएदे मन्द है। (2) राल सफ़ेद उम्दा : 5 तोला, मुलैठी (Liquorice) मुक़श्शर : 5 तोला। मुलैठी को छील लें या'नी उस के ऊपर के छिलके उतार लें, फिर दोनों को पीस कर ब हिफ़ाज़त रख लें। ख़ाली पेट सुब्ह शाम आधा आधा चम्मच आधा कप अरके सौफ़ के साथ ता हुसूले शिफ़ा

इस्ति'माल फ़रमाएं। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ! मे'दे के हर तरह के अल्सर के लिये मुफ़ीद है।
(माहनामा फ़ैज़ाने मदीना, अगस्त/सितम्बर 2018, स. 56)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

अल्लाह

يَا وَاسِعَ الْمَخْفِرَةِ
اغْفِرْ لِي -

तरजमा :

ऐ वसीअ मग़िफ़रत वाले ! मेरी मग़िफ़रत फ़रमा आमीन।



6 रमज़ानुल मुबारक 1439 हि.

अलमौत

फ़ेहरिस

उ़वान	सफ़ह	उ़वान	सफ़ह
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	मुंह की बदबू का इलाज	12
49 इन्तिहाई कारआमद मदनी फूल	1	मुंह की सफ़ाई का तरीका	14
30 ग़लतियों की निशान देही	8	मे'दे के अल्सर का अस्ल इलाज	17
16 घरेलू इलाज और कारआमद मदनी फूल	9	मे'दे की बीमारियों का घरेलू इलाज	17
सांप, बिच्छू, कन्खजूरा और च्यूंटियों से नजात के तरीके	11	मे'दे के अल्सर वगैरा के	
		2 घरेलू इलाज	18

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اِنَّا نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

فرمانے امیरे اہلے سوننات بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

चेहरे का हुस्न (नूर) अल्लाह पाक की
इबादत से होता है।



978-969-722-179-0



01082186



فیضان مدینہ محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی

+92 21 111 25 26 92 0313-1139278

www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net

feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net